9

विद्यालयी शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए कला समेकित शिक्षा

पुष्पेंद्र यादव*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने अपने दस्तावेज़ में स्पष्ट किया है कि प्रारंभिक स्तर पर भारत में लगभग पाँच करोड़ विद्यार्थी ऐसे हैं जो बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के कौशलों को अर्जित करने में कठिनाई महसूस करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने ऐसे बच्चों के लिए खास कदम उठाने और 2025 तक इन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की मुख्य धारा में शामिल करने का लक्ष्य रखा है। *असर 2021* और *राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण 2021* के दस्तावेज़ों का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थी गणित, अंग्रेज़ी समेत कई अन्य विद्यालयी विषयों के लिए निर्धारित सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं। भारत उन देशों की सूची में शामिल है जिसे सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने के तहत 2030 तक गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा को सर्वसुलभ करना है। ऐसे में परंपरागत शिक्षण-अधिगम विधियों में कला समेकित शिक्षा का सही जुड़ाव शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए काफ़ी मददगार साबित हो सकता है। शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में कला (नृत्य, थियेटर, संगीत, पेंटिंग, मिट्टी के बर्तन, कागज़ शिल्प, मुखौटा और कठपुतली इत्यादि) के जुड़ाव से विद्यार्थी मनोरंजक ढंग से, सामूहिक रूप में, अधिक जुड़ाव से एवं स्वयं करके नई अवधारणाओं को सीखते हैं वहीं शिक्षक विद्यार्थियों में आपसी जुड़ाव, सृजनात्मकता, उच्च प्रतिधारण इत्यादि जैसे महत्वपूर्ण कौशलों का विकास कर सकते हैं। इस आलेख में लेखक ने संभावित उदाहरणों और गतिविधियों के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि कला समेकित शिक्षा प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए कैसे उपयोगी सिद्ध हो सकती है और शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को कैसे सकारात्मक तरीके से संवर्धित कर सकती है।

"जीवन के बारे में कुछ सत्य ऐसे हैं जिन्हें केवल कहानियों, गीतों, नृत्यों या चित्रों के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। कला प्रसन्न करती है, निर्देश देती है, सांत्वना देती है। यह हमारी भावनाओं को शिक्षित करती है" डाना गिओई, अमेरिकी *लेखक, कवि* (2007)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ने प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए गतिविधि आधारित अधिगम, अनुभवात्मक अधिगम और सामूहिक अधिगम को महत्वपूर्ण माना है। इसके लिए विद्यालयी शिक्षण में कलात्मक पहलुओं (संगीत, नृत्य, दृश्य कला और रंग-मंच) का

**पीएच.डी. शोधार्थी,* शिक्षा विभाग (केंद्रीय शिक्षा संस्थान), दिल्ली विश्वविद्यालय, 33, छात्र मार्ग, दिल्ली 110 007

समावेश ठीक तरह से करने पर ज़ोर दिया गया था। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार कला समेकित शिक्षा का उपयोग सिर्फ़ विद्यार्थियों में सृजनात्मकता विकास और सौंदर्य बोध के लिए नहीं होना चाहिए, अपितु कला समेकित शिक्षा को विद्यालय में इस प्रकार से उपयोग में लाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों का समग्र विकास संभव हो सके। इसका प्रयोग विद्यार्थियों में कला आधारित पूछ ताछ (Art based inquiry), व्यक्तित्व निर्माण और अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने की दिशा में किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने कला समेकित शिक्षा को अंतर-पाठ्यचर्या शिक्षणशास्त्र दृष्टिकोण (Cross-curricular pedagogical approach) के रूप में देखा है। शिक्षा नीति का मानना है कि विद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों को सिखाने में कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को प्रयोग में लाया जाना चाहिए। कला समेकित शिक्षा को अनुभवात्मक शिक्षण पर ज़ोर देने के साथ-साथ, आनंदमय कक्षाएँ बनाने के अतिरिक्त भारतीय कला और संस्कृति को आत्मसात कर शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में शामिल किया जाना चाहिए एवं शिक्षा और संस्कृति के बीच के जुड़ाव को मज़बूत किया जाना चाहिए।

कला समेकित शिक्षा

कला समेकित शिक्षण एक आविष्कारशील और रचनात्मक शिक्षण दृष्टिकोण है जिसके माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न कला रूपों के माध्यम से अवधारणाओं का वर्णन, प्रयोग और प्रदर्शन करते हैं। पाठ्यक्रम में कला एकीकरण का तात्पर्य शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में तथ्यों, विचारों, अवधारणाओं, प्रक्रियाओं एवं विधियों में कला के विभिन्न रूपों के माध्यम से एक विद्यार्थी द्वारा अर्जित किए जाने वाले कौशलों की खोज करना है। कला को एक अलग विषय के रूप में पढ़ाने के बजाय, शिक्षक विभिन्न शैक्षणिक विषयों को अधिक आकर्षक तरीके से पढ़ाने के लिए नृत्य, नाटक, संगीत, दृश्य कला आदि का उपयोग करते हैं। कला के साथ विभिन्न शैक्षणिक अवधारणाओं को समेकित करके कक्षा में समग्र शिक्षा संभव है। इसका उपयोग करके विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक, व्यावहारिक और मनोप्रेरण (Psychomotor) क्षेत्र के विकास के साथ-साथ संज्ञानात्मक क्षेत्र को भी लक्षित किया जा सकता है।

कला समेकित शिक्षा को शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में कई प्रकार से प्रयोग में लाया जा सकता है, जैसे— ऐतिहासिक घटनाओं का पता लगाने के लिए कलाकृति का उपयोग करना, गणित में पैटर्न सिखाने के लिए संगीत और रंगोली को शामिल करना, साहित्य का पता लगाने के लिए नाटक का उपयोग करना इत्यादि। शैक्षणिक विषयों के साथ कला का मिश्रण करके, शिक्षकों का लक्ष्य अधिगम को अधिक व्यापक और बहुआयामी बनाना है।

कला समेकित शिक्षा के लाभ

शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में कला समेकित शिक्षा के समुचित प्रयोग से विद्यार्थियों में कई प्रकार के

कौशलों को विकसित किया जा सकता है। लेखक ने कुछ प्रमुख कौशलों का विवरण नीचे क्रमवार तरीके से दिया है—

फ्लो चार्ट 1— कला समेकित शिक्षा के शिक्षण में प्रयोग से विद्यार्थिओं में उत्पन्न होने वाले आपेक्षित कौशल

- **अधिगम की प्रक्रिया में आपसी जुड़ाव को प्रोत्साहित करना**— शिक्षण में कला को शामिल करने से अधिगम को अधिक मनोरंजक और सहयोगात्मक बनाया जा सकता है। जिससे विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित होता है और सीखने की गतिविधि में भागीदारी को प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- **रचनात्मक सोच के विकास पर बल देना**— विभिन्न कला रूपों का प्रदर्शन विद्यार्थियों को रचनात्मक तरीके से सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है एवं समस्या-समाधान कौशल और नवीन सोच को बढ़ावा देने का कार्य करता है।
- **उत्तम स्मृति प्रतिधारण (Retention)**— कला अनुभवों की बहुसंवेदी प्रकृति उत्तम स्मृति प्रतिधारण करने और जटिल अवधारणाओं को समझने में विद्यार्थियों की सहायता कर सकती है।
- **समग्र शिक्षा**— कला समेकित शिक्षा विद्यार्थियों द्वारा विविध शिक्षण शैलियों और क्षमताओं द्वारा सीखने की ज़रुरत को पूरा कर सकती है। जिससे विद्यार्थियों को उनकी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के अनुरूप सामग्री के साथ जुड़ने की अनुमति मिलती है।
- **सहानुभूति और परिप्रेक्ष्य-धारणा (Perspective taking)**— शिक्षण में कला के समेकन से सहानुभूति और परिप्रेक्ष्य-धारणा को बढ़ावा मिल सकता है। जिससे विद्यार्थियों को विभिन्न दृष्टिकोणों और संस्कृतियों को समझने में मदद मिलती है और वे स्वयं के नज़रिए और दृष्टिकोण से नई अवधारणाओं को समझ सकते हैं।
- **आलोचनात्मक विश्लेषण**— विषयवस्तु या फिर शिक्षण विधि में अंतर्निहित कला का विवरण विद्यार्थियों को विभिन्न तत्वों का विश्लेषण और व्याख्या करने के लिए प्रोत्साहित करता है एवं उनमें आलोचनात्मक सोच कौशल (Critical thinking skills) को बढ़ावा देता है।
- **संप्रेषण कौशल**— कला समेकित अधिगम में अक्सर विद्यार्थियों को विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने की आवश्यकता होती है, जिससे उन्हें मज़बूत संप्रेषण कौशल विकसित करने में मदद मिलती है।

- **सहयोग (Collaboration)**— शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया के दौरान कई प्रकार की कलात्मक परियोजनाओं में आपसी सहयोग, विद्यार्थियों के बीच सहभागिता को बढ़ावा देता है।
- **आत्मविश्वास निर्माण**— कला समेकित अधिगम के साथ सफलतापूर्वक जुड़ने से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान बढ़ सकता है।

कला समेकित शिक्षा से संबंधित साहित्य की समीक्षा

लेखक ने कला समेकित शिक्षा से संबंधित शोधों का बारीकी से अध्ययन और विश्लेषण किया है एवं कुछ महत्वपूर्ण शोधों का उल्लेख नीचे किया गया है—

आइजनर (2002) का शोध कार्य इस बात पर ज़ोर देता है कि कला-समेकित शिक्षा समस्या-समाधान और कल्पनाशील सोच जैसे संज्ञानात्मक कौशल विकसित करती है। कला को अन्य विषयों में एकीकृत करने से विद्यार्थियों की जटिल समस्याओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने की क्षमता बढ़ती है। हेटलैंड, एल. और अन्य (2013) का अध्ययन 'स्टूडियो हैबिट्स ऑफ माइंड' ढाँचे पर केंद्रित है, जिसमें कला शिक्षा के माध्यम से विकसित की गई आठ आदतों पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें शिल्प विकसित करना, संलग्न करना और जारी रखना और अवलोकन करना शामिल है। डेजी (2002) अपने व्यापक शोध रिपोर्ट में कला समेकित शिक्षा को उन्नत शैक्षणिक प्रदर्शन, बेहतर सामाजिक कौशल और सीखने में बढ़ती व्यस्तता से जोड़ने वाले साक्ष्य प्रस्तुत करती है। यह कला एकीकरण के अंतःविषय लाभों को रेखांकित करता है। बैमफोर्ड (2006) का शोध संकलन में बढ़ी हुई रचनात्मकता, आत्मविश्वास और सहयोग कौशल सहित कला समेकित शिक्षा के सकारात्मक प्रभाव पर विश्वव्यापी साक्ष्य प्रस्तुत करता है। फिस्के (1999) की शोध रिपोर्ट इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे कला समेकित शिक्षा विद्यार्थियों की व्यस्तता, उपस्थिति और समग्र स्कूल माहौल में सुधार करती है। यह कला समेकन के सकारात्मक प्रभाव को प्रदर्शित करने वाले केस अध्ययन प्रस्तुत करता है।

इन विद्वानों के संदर्भों को शामिल करते हुए, यह स्पष्ट है कि कला समेकित शिक्षा न केवल विद्यार्थियों की रचनात्मक और कलात्मक क्षमताओं को बढ़ाती है, बल्कि उनके समग्र संज्ञानात्मक विकास, शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक कौशल में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। अंतःविषय संबंधों और सोचने के विविध तरीकों को बढ़ावा देकर, कला समेकित शिक्षा सीखने के अनुभव को समृद्ध करती है और विद्यार्थियों को जीवन के विभिन्न पहलुओं में सफलता के लिए तैयार करती है।

कला समेकित शिक्षण और परंपरागत शिक्षण में अंतर

लेखक ने कला समेकित शिक्षण और परंपरागत शिक्षण के बीच के मुख्य अंतर को निम्न बिंदुओं के आधार पर सारणीबद्ध किया है—

सारणी— कला समेकित शिक्षण और पारंपरिक शिक्षण के मध्य अंतर

पहलू	कला समेकित अधिगम	परंपरागत अधिगम
शिक्षण दृष्टिकोण	समझ को गहरा करने के लिए कलात्मक गतिविधियों को शैक्षणिक विषयों के साथ जोड़ा जाता है।	मुख्य रूप से व्याख्यान, पाठ्यपुस्तकों और गृहकार्य के माध्यम से सामग्री वितरित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
सीखने की शैली	दृश्य, श्रवण, गतिज, आपसी जुड़ाव और सहयोगात्मक रूप से सीखने की अपील।	सामान्यतयः श्रवण और दृश्य रूप द्वारा विषयवस्तु को सीखने और सिखाने पर ध्यान केंद्रित होता है।
जुड़ाव	विद्यार्थियों की विषय के प्रति रुचि को बढ़ाने के लिए रचनात्मक गतिविधियों का उपयोग करते हुए उन्हें विषयवस्तु की ओर आकर्षित किया जाता है।	सहभागिता का स्तर अलग-अलग हो सकता है एवं कुछ विद्यार्थी उदासीन हो सकते हैं।
रचनात्मकता	विद्यार्थियों द्वारा समस्याओं को रचनात्मक रूप से सोचने और उनके विविध समाधान तलाशने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।	रचनात्मक सोच को बढ़ावा देने पर सीमित ज़ोर होता है।
गंभीर चिंतन	कलात्मक अभिव्यक्ति और समस्या-समाधान के माध्यम से आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा दिया जाता है।	आलोचनात्मक सोच प्रस्तुत जानकारी का विश्लेषण करने तक ही सीमित हो सकती है।
अंतःविषय सीखना	विषयों को एकीकृत करता है और विषयों के बीच संबंधों को समझने पर ज़ोर देता है।	विषयों को अक्सर सीमित अंतर-विषय एकीकरण के साथ अलग-अलग पढ़ाया जाता है।
मूल्यांकन का तरीका	कलात्मक परियोजनाओं सहित विविध आकलन और मूल्यांकन विधियों का उपयोग करता है।	मुख्य रूप से परीक्षण, पहेली और पारंपरिक मूल्यांकन विधियों का उपयोग करता है।
याद रखने की क्रिया	रटने की बजाय समझ बनाने और उसे प्रयोग करने पर ज़ोर दिया जाता है।	तथ्यों और सूचनाओं को याद रखने पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है।
विद्यार्थियों का जुड़ाव	विद्यार्थी सीखने को प्रदर्शित करने के लिए सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, सहयोग करते हैं और नए ज्ञान का सृजन करते हैं।	विद्यार्थी अक्सर शिक्षकों से निष्क्रिय रूप से जानकारी प्राप्त करते हैं।
कक्षा का वातावरण	विद्यार्थी-केंद्रित गतिविधियों के साथ एक गतिशील और संवादात्मक कक्षा को बढ़ावा दिया जाता है।	व्याख्यान और नोट-लेखन के साथ कक्षा अधिक शिक्षक-केंद्रित हो सकती है।
दीर्घकालिक प्रतिधारण	रचनात्मक और अनुभवात्मक प्रकृति के कारण सीखना अक्सर अधिक यादगार होता है।	प्रतिधारण भिन्न हो सकता है और कुछ जानकारी समय के साथ भूली जा सकती है।
सामाजिक और भावनात्मक कौशल	सहयोगी परियोजनाओं के माध्यम से सामूहिक कार्य सहानुभूति और आत्म-अभिव्यक्ति को बढ़ावा दिया जाता है।	पारंपरिक सेटिंग में सामाजिक कौशल पर कम ज़ोर दिया जा सकता है।

उपर्युक्त तालिका कला समेकित शिक्षण और पारंपरिक शिक्षण के मध्य अंतर पर प्रकाश डालती है।

कला समेकित शिक्षा की मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक सैद्धांतिक जड़ों का विश्लेषण

कला समेकित शिक्षा कई मनोवैज्ञानिक सैद्धांतिक जड़ों और शैक्षिक दर्शन पर आधारित है जो विभिन्न विषय क्षेत्रों में कला के समेकन करने के मूल्य पर ज़ोर देती है। लेखक द्वारा नीचे कुछ ऐसे प्रमुख मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक सैद्धांतिक आधारों का विवरण दिया है जिनसे कला समेकित शिक्षा की पृष्ठभूमि जुड़ती है—

- **रचनावादी सिद्धांत**— पियाजे, जे. (1970) और वायगोत्स्की, एल.एस. (1978) जैसे मनोवैज्ञानिकों ने सक्रिय जुड़ाव और व्यावहारिक अधिगम के महत्व पर ज़ोर दिया है। कला समेकित शिक्षा विद्यार्थियों को कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से अपनी समझ बनाने, अन्वेषण करने और नई समझ का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित करके इन विचारों के साथ संरेखित होती है।
- **बहु-बुद्धि सिद्धांत**— गार्डनर, एच. (1983) द्वारा प्रस्तावित यह सिद्धांत बताता है कि बुद्धिमत्ता कोई एकल एकात्मक अवधारणा नहीं है, बल्कि विभिन्न प्रकार की बुद्धिमत्ता को समाहित करती है। कला समेकित शिक्षा विभिन्न बुद्धिमत्ता को पहचानती है और उन्हें पूरा करती है, जिससे विद्यार्थियों को कलात्मक, संगीतमय, संवेदनात्मक और पारस्परिक साधनों के माध्यम से सामग्री से जुड़ने की अनुमति मिलती है।
- **अनुभवात्मक शिक्षा**— कोल्ब, डी.ए. (1984) के काम पर आधारित, अनुभवात्मक शिक्षा प्रत्यक्ष अनुभवों और प्रतिबिंब (Direct experiences and reflection) के माध्यम से सीखने पर ज़ोर देती है। कला समेकित शिक्षण विद्यार्थियों को कला के जुड़ाव के माध्यम से व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है। यह सामग्री के साथ गहरा संबंध विकसित करता है और उनकी सीखने की प्रक्रिया पर प्रतिबिंब को प्रोत्साहित करता है।
- **रेग्गियो एमिलिया दृष्टिकोण**— मालागुज़ी और अन्य (1994) ने रेग्गियो एमिलिया दर्शन पर प्रमुख कार्य किया है जिसमें उन्होंने बताया कि प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा के लिए यह दृष्टिकोण बच्चे के नेतृत्व वाली शिक्षा, रचनात्मकता और सहयोग के महत्व पर ज़ोर देता है। कला समेकित शिक्षा बच्चों की सहज जिज्ञासा को महत्व देकर और उन्हें विभिन्न कलात्मक माध्यमों के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करके रेग्गियो एमिलिया दर्शन के साथ संरेखित होती है।
- **ब्लूम का वर्गीकरण**— ब्लूम, बी.एस. और अन्य (1956) ने शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण सीखने को निचले स्तर की सोच (याद रखना और समझना) से लेकर उच्च स्तर की सोच (विश्लेषण करना और बनाना) तक के स्तरों में वर्गीकृत करता है। कला समेकित शिक्षा विद्यार्थियों को उनकी समझ को प्रदर्शित करने वाले कलात्मक कार्यों का विश्लेषण, मूल्यांकन और निर्माण करने की आवश्यकता के द्वारा

उच्च-क्रम सोच कौशल (Higher order thinking skills) का समर्थन करती है।

- **कला आधारित अनुसंधान**— आइजनर, इ. (2002) जैसे विद्वानों ने कला आधारित अनुसंधान की वकालत की है, जिसमें अनुसंधान प्रश्नों का पता लगाने के लिए कलात्मक तरीकों का उपयोग करना शामिल है। कला समेकित शिक्षा विषय क्षेत्रों में पूछताछ, जाँच और अभिव्यक्ति के लिए कला को एक उपकरण के रूप में उपयोग करना इस दृष्टिकोण पर आधारित है।
- **सौंदर्य शिक्षा**— ग्रीन, एम. (1995) के अनुसार सौंदर्य शिक्षा सौंदर्य, भावना और मानवीय अनुभव के प्रति गहरी सराहना विकसित करने के लिए कला से जुड़ने के महत्व पर ज़ोर देती है। कला समेकित शिक्षा विषयों को कलात्मक तत्वों से जोड़कर इस दर्शन के साथ संरेखित होती है जो भावनात्मक और सौंदर्य संबंधी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करती हैं।
- **अंत:विषय अधिगम**— अंत:विषय अधिगम (Trans-disciplinary learning) में पारंपरिक विषयों के बीच की बाधाओं को तोड़ कर उनमें समग्र और परस्पर तरीके से आपसी संबंध की खोज करना शामिल है। कला समेकित शिक्षा विद्यार्थियों को कलात्मक नज़रिए (Artistic lens) के माध्यम से विषयों के आपसी संबंध का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करके, सामग्री को अधिक व्यापक तौर पर प्रयोग कर समझ को बढ़ावा देकर, इस दृष्टिकोण का समर्थन करती है।

ये सैद्धांतिक जड़ें सामूहिक रूप से कला समेकित शिक्षा के अभ्यास के लिए एक मज़बूत आधार प्रदान करती हैं। कला को शिक्षा में एकीकृत करके, शिक्षक रचनात्मकता, कल्पना और सोचने के विविध तरीकों की शक्ति का उपयोग कर सकते हैं। जिससे विद्यार्थियों के लिए एक समृद्ध और अधिक सार्थक तरीके से सीखने का अनुभव बढ़ सकता है।

कला समेकित शिक्षा का कक्षा में उपयोग

कला समेकित शिक्षा एक दृष्टिकोण है जो सीखने के अनुभवों को बढ़ाने के लिए पारंपरिक शैक्षणिक विषयों के साथ कलात्मक गतिविधियों और अवधारणाओं को जोड़ती है। यह विद्यार्थियों को रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से सामग्री के साथ जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है एवं विषयों के बीच गहरी समझ और संबंधों को बढ़ावा देता है। यहाँ प्रारंभिक स्तर पर विभिन्न विषयों में कला समेकित शिक्षा के कुछ कक्षा उदाहरण और गतिविधियों को प्रस्तुत किया गया है—

गणित और लोक कला एकीकरण

उदाहरण— पैटर्न, ज्यामितीय आकृतियाँ और संख्याज्ञान

उद्देश्य— रचनात्मक तरीके से ज्यामितीय आकृतियों की पहचान और संख्या ज्ञान को समझना

गतिविधि— गणित में संख्या ज्ञान और पैटर्न की पहचान करने के लिए वर्ली कला का उपयोग बहुत ही मनोरंजक ढंग से किया जा सकता है। दिखने में सुंदर और आकर्षक होने के कारण विद्यार्थी इसमें बहुत रुचि लेते हैं। भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार के कलात्मक प्रारूप को

बनाने का चलन है। शिक्षक सांस्कृतिक और क्षेत्रीय पृष्ठभूमि को समझ कर कलात्मक प्रारूप का चयन कर सकते हैं। विद्यार्थी शिक्षक द्वारा कक्षा में बताई गई ज्यामितीय आकृतियों और पैटर्न को कला फार्म में ढूँढ़नें का प्रयास करते हैं। एक जैसे पैटर्न की संख्या को नोट करते हैं फिर स्वयं भी उस कला का निर्माण करते हैं। इस तरह की गतिविधि में बार-बार शामिल होने से वे विभिन्न तरह की ज्यामितीय आकृतियों की पहचान करने और उन्हें गिनने के कारण संख्याज्ञान का भी अभ्यास कर सकते हैं। इस तरह की गतिविधि में शामिल होने से विद्यार्थियों में गत्यात्मक कौशलों का भी समुचित विकास हो पाता है।

गतिविधि— विद्यार्थी गणित कक्षा में विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों और समरूपता के बारे में सीखते हैं। फिर वे समरूपता सिद्धांतों की अपनी समझ प्रदर्शित करने के लिए विभिन्न आकृतियों, जैसे— त्रिकोण, वर्ग और वृत्त का उपयोग करके अपनी स्वयं की सममित कलाकृति बनाते हैं।

भाषा कला और नाटक एकीकरण

उदाहरण— पाठक रंगमंच

उद्देश्य— रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देते हुए पढ़ने की समझ और प्रवाह को बढ़ाना।

गतिविधि— भाषा कला कक्षा में एक कहानी या नाटक पढ़ने के बाद, विद्यार्थी 'पाठक के थिएटर' प्रदर्शन के लिए एक स्क्रिप्ट बनाने के लिए समूहों में काम करते हैं। वे पाठ की अपनी समझ का उपयोग करके इसे एक स्क्रिप्ट में ढालते हैं और फिर उचित अभिव्यक्ति, स्वर और इशारों के साथ दृश्यों का प्रदर्शन करते हैं।

चित्र 1— निगम प्रतिभा विद्यालय, न्यू चौखंडी, नई दिल्ली के विद्यार्थी वर्ली चित्रों (पारंपरिक कला का एक रूप) के साथ प्रयोग करते हुए

स्रोत— https://ncert.nic.in/deaa/pdf/ArtIntegratedLearning-Handbook-Classes%20I-V.pdf

गणित और दृश्य कला एकीकरण

उदाहरण— ज्यामितीय कला का निर्माण

उद्देश्य— रचनात्मक तरीके से विद्यार्थियों को ज्यामितीय आकृतियों और समरूपता के बारे में सिखाना।

चित्र 2— निगम प्रतिभा विद्यालय, न्यू चौखंडी, नई दिल्ली के विद्यार्थी नाटक की गतिविधि में भाग लेते हुए

स्रोत— https://ncert.nic.in/deaa/pdf/ArtIntegratedLearning-Handbook-Classes%20I-V.pdf

विज्ञान और संगीत एकीकरण

उदाहरण— ध्वनि और कंपन अन्वेषण

उद्देश्य— विद्यार्थियों को ध्वनि तरंगों, कंपन और संगीत से उनके संबंध के बारे में पढ़ाना।

गतिविधि— विद्यार्थी विज्ञान की कक्षा में ध्वनि तरंगों और कंपन के बारे में सीखते हैं। फिर वे रबर बैंड, कार्डबोर्ड और कंटेनर जैसी सामग्रियों का उपयोग करके सरल संगीत वाद्ययंत्र बनाने के लिए समूहों में काम करते हैं। विभिन्न सामग्रियों और तनावों के साथ प्रयोग करके, उन्हें पता चलता है कि पिच और आयतन उनके उपकरणों की विशेषताओं से कैसे प्रभावित होते हैं।

सामाजिक अध्ययन और दृश्य कला एकीकरण

उदाहरण— ऐतिहासिक कलाकृतियों की प्रदर्शनी

उद्देश्य— विद्यार्थियों की समझ को गहरा करने के लिए ऐतिहासिक घटनाओं को दृश्य प्रतिनिधित्व के साथ जोड़ें।

गतिविधि— विद्यार्थी सामाजिक अध्ययन कक्षा में एक विशिष्ट ऐतिहासिक अवधि का अध्ययन करते हैं। वे उस युग की कलाकृतियों और वस्तुओं पर शोध करते हैं और ऐतिहासिक संदर्भ से प्रेरित होकर अपनी कलाकृतियाँ और वस्तुएँ बनाते हैं। इसका समापन एक प्रदर्शनी में होता है जहाँ विद्यार्थी प्रत्येक टुकड़े के पीछे के ऐतिहासिक महत्व को समझाते हुए अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं।

चित्र 3— विद्यार्थियों द्वारा मिट्टी और क्ले के प्रयोग द्वारा निर्मित किए गए कुछ बर्तन

स्रोत— https://ncert.nic.in/deaa/pdf/ArtIntegratedLearning-Handbook-Classes%20I-V.pdf

शारीरिक शिक्षा और नृत्य एकीकरण

उदाहरण— सांस्कृतिक नृत्य का प्रदर्शन

उद्देश्य— नृत्य और गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों से परिचित कराना।

गतिविधि— विद्यार्थी शारीरिक शिक्षा की कक्षा में दुनियाभर के विभिन्न सांस्कृतिक नृत्यों के बारे में सीखते हैं। वे आंदोलनों, वेशभूषा और सांस्कृतिक महत्व पर ध्यान केंद्रित करते हुए अनुसंधान और अभ्यास के लिए एक नृत्य चुनते हैं। फिर वे कक्षा के सामने अपना चुना हुआ नृत्य प्रस्तुत करते हैं और उस संस्कृति के बारे में जो उन्होंने सीखा है उसे साझा करते हैं।

नोट— उपर्युक्त उदाहरण और गतिविधियों के अतिरिक्त सांस्कृतिक नृत्य जैसे कत्थक में कदम ताल के अभ्यास द्वारा संख्याओं को सीधे क्रम और विपरीत क्रम (1 2 3 4... 4 3 2 1) में पढ़ने के अभ्यास से संख्याज्ञान को मज़बूत करना, लोक संगीत और वाद्य यंत्रों की सहायता से ध्वनि और उसकी विभिन्न आवृत्तियों की पहचान कराना, मंडला कला द्वारा गणित की अवधारणाओं को समझाने जैसी कई कलात्मक गतिविधियों को शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में शामिल किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त शिक्षक कला से जुड़े अपने मौलिक विचारों को भी अधिगम की प्रक्रिया में शामिल कर सकते हैं।

शिक्षकों द्वारा कला समेकित शिक्षा का कक्षा में प्रयोग

यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं, ताकि यह समझा जा सके कि कला समेकित शिक्षा प्रारंभिक स्तर पर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार से उपयोगी सिद्ध हो सकती है, ताकि शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को और मज़बूत किया जा सके।

विद्यार्थियों में आपसी जुड़ाव और भागीदारी में बढ़ावा देने में

उदाहरण— कहानी के चित्र बनाना

शिक्षक विद्यार्थियों से उनके द्वारा पढ़ी गई कहानी के दृश्यों का वर्णन करवाकर कला को भाषा कला में एकीकृत कर सकते हैं। यह गतिविधि जुड़ाव को बढ़ाती है, क्योंकि विद्यार्थी कथा की कल्पना और

चित्र 4— विद्यार्थी सांस्कृतिक नृत्य में भाग लेकर उसका आनंद लेते हुए

स्रोत— https://ncert.nic.in/deaa/pdf/ArtIntegratedLearning-Handbook-Classes%20I-V.pdf

उसका चित्रण करते हैं जिससे कथा के पात्रों, रंगमंच सज्जा और कथानक के बारे में चर्चा होती है।

बेहतर अवधारणा प्रतिधारण और समझ

उदाहरण— बॉडी मैप के साथ काइनेस्थेटिक अधिगम

भूगोल के पाठ में शिक्षक विद्यार्थियों को खेल के मैदान पर मानव शरीर से यानि सब समूह में खड़े होकर एक साथ देश का नक्शा बनाने में मार्गदर्शन देते हैं। विद्यार्थी लेट जाते हैं और जिस देश के बारे में सीख रहे होते हैं उसका आकार बनाते हैं, जिससे उन्हें इसके भूगोल आकार को आंतरिक करने में मदद मिलती है।

रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना

उदाहरण— रोज़मर्रा की वस्तुओं से संरचनाओं का निर्माण

संरचनाओं पर एक विज्ञान इकाई के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों को केवल टूथपिक्स और मार्शमैलो का उपयोग करके स्थिर संरचनाएँ (Stable structures) बनाने की चुनौती देते हैं। यह गतिविधि रचनात्मक समस्या-समाधान और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देती है, क्योंकि विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के संयोजनों में एक साथ बताई गई सामग्री का प्रयोग करते हैं।

क्रॉस-पाठ्यचर्या कनेक्शन

उदाहरण— ऐतिहासिक कलाकृतियाँ और रचनात्मक लेखन

एक ऐतिहासिक युग का अध्ययन करते समय शिक्षक विद्यार्थियों से उस समय अवधि की कलाकृतियों पर शोध करवाते हैं और फिर उन लोगों के बारे में काल्पनिक कहानियाँ लिखते हैं जिन्होंने उन कलाकृतियों का उपयोग किया था। यह इतिहास, शोध और रचनात्मक लेखन का मिश्रण है।

आत्मविश्वास और आत्म-अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना

उदाहरण— व्यक्तिगत पहचान कोलाज

शिक्षक विद्यार्थियों को उनकी व्यक्तिगत पहचान, रुचियों और पृष्ठभूमि को प्रतिबिंबित करने वाले कोलाज बनाने के लिए उनका मार्गदर्शन करते हैं। यह गतिविधि आत्म-अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करती है और आत्मविश्वास बढ़ाती है, क्योंकि विद्यार्थी अपने साथियों के साथ अपने कोलाज साझा करते हैं।

विभिन्न आकलन या मूल्यांकन विधियाँ

उदाहरण— दृश्य गणित समस्या समाधान

शिक्षक विद्यार्थियों से गणित की समस्याओं का समाधान निकालने या चित्र बनाने के लिए दृश्य कलाओं को गणित में शामिल करते हैं। यह दृष्टिकोण उपन्यास और कलात्मक तरीके से गणित दक्षता का आकलन करता है।

सकारात्मक कक्षा वातावरण और व्यवहार प्रबंधन

उदाहरण— शांति के लिए सचेतन रंग

शिक्षक एक शांत और केंद्रित कक्षा वातावरण बनाने के लिए दिन की शुरुआत या अंत में सावधानीपूर्वक रंग भरने वाले सत्र शुरू करते हैं। यह व्यवहार प्रबंधन में मदद कर सकता है और एक सकारात्मक दिनचर्या बना सकता है।

शिक्षक व्यावसायिक विकास

उदाहरण— कला-एकीकृत कार्यशाला भागीदारी

शिक्षक नई तकनीकों और रणनीतियों को सीखने के लिए कला समेकन पर कार्यशालाओं में भाग लेते हैं।

फिर वे इन तरीकों को कक्षा में लाते हैं, जिससे शिक्षक के रूप में उनका स्वयं का विकास होता है।

वास्तविक जीवन में अनुप्रयोग और शिक्षण का आनंद

उदाहरण— सामुदायिक सेवा कला परियोजनाएँ

शिक्षक विद्यार्थियों के साथ मिलकर ऐसी कला परियोजनाएँ बनाते हैं जो समुदाय की ज़रूरतों को पूरा करती हैं, जैसे भित्ति चित्र बनाना या स्थानीय आश्रयों के लिए वस्तुएँ तैयार करना। यह न केवल नागरिक ज़िम्मेदारी सिखाता है, बल्कि कला के सकारात्मक प्रभाव को देखकर कक्षा में खुशी की भावना का प्रसार भी करता है।

ये उदाहरण बताते हैं कि कला समेकित शिक्षण से शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को कैसे लाभ होता है। सभी विषयों में कला को शामिल करके, शिक्षक एक गतिशील, समावेशी और आकर्षक शिक्षण वातावरण बना सकते हैं।

निष्कर्ष

कला समेकित शिक्षा एक ऐसे दृष्टिकोण को संदर्भित करती है जिसमें दृश्य कला, संगीत, नृत्य, रंगमंच और साहित्य इत्यादि जैसी कलाओं को विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन और भाषा कला सहित अन्य विद्यालयी विषयों के पाठ्यक्रम में जोड़ने का प्रयास किया जाता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के बीच रचनात्मक और अनुभवात्मक तत्वों को शामिल करके उनमें आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और आपसी जुड़ाव को बढ़ावा देकर सीखने को अधिक आनंदमय बनाना है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार विद्यार्थियों में सही प्रकार के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास के लिए कला समेकित शिक्षा विद्यालयी शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यह समग्र अधिगम (Holistic learning) को बढ़ावा देती है जिससे समग्र शैक्षिक परिणामों में वृद्धि होती है। इसीलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने विद्यालय स्तर पर कला समेकित शिक्षा को शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में शामिल करने की वकालत की है। शिक्षा नीति का मानना है कि कला समेकित शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों को सीखने के दौरान कलात्मक पहलुओं की जानकारी देना मात्र नहीं है, बल्कि उनका समग्र विकास कर एक अच्छे नागरिक के रूप में तैयार करना है। लेखक की दृष्टि में यदि विद्यालय स्तर पर परंपरागत शिक्षण में सही प्रकार से कला समेकित शिक्षा को शामिल किया जाए तो इससे सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में सहायता मिल सकती है जिससे विद्यार्थियों को अर्थपूर्ण अधिगम की ओर ले जाया जा सकता है। विद्यालय स्तर पर कला समेकित शिक्षा और विभिन्न विषयों पर प्रकाशित हुए लेख इस ओर इशारा करते हैं कि कलात्मक पहलुओं के शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में सही प्रकार का जुड़ाव विद्यार्थियों को उच्च्च उपलब्धि की तरफ़ ले जाता है। ऐसे में विद्यालय स्तर पर कला समेकित शिक्षा का उपयोग विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए सही मायने में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ

प्रथम गैर-सरकारी संस्थान. 2021. *असर रिपोर्ट*. सफदरजंग, नई दिल्ली. https://asercentre.org/aser-2021/

आइजनर, इ. 2002. *द आर्ट्स एंड क्रिएशन ऑफ माइंड*. येले यूनिवर्सिटी प्रेस.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/nf2005-english.pdf

———. 2023. *आर्ट इंटीग्रेटेड लर्निंग हैंडबुक*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/deaa/pdf/ArtIntegratedLearning-Handbook-Classes%20I-V.pdf

कोल्ब, डी.ए. 1984. *एक्सपीरियंसिअल लर्निंग : एक्सपीरियंस एस द सोर्स ऑफ लर्निंग एंड डेवलपमेंट*. प्रेन्टिस हॉल.

गार्डनर, एच. 1983. *फ्रेम्स ऑफ माइंड : द थ्योरी ऑफ मल्टीपल इंटेलिजेंस*. बेसिक बुक्स.

गिओई. डाना. 2007. कोट. https://quotefancy.com/quote/1771724/Dana-Gioia-There-are-some-truths-about-life-that-can-be-expressed-only-as-stories-or

ग्रीन, एम. 1995. *रेलीसिंग द इमेजिनेशन : एसेज ओन एजुकेशन, द आर्ट्स एंड सोशल चेंज*. जोस्से-बास प्रेस.

डेजी. 2002. *क्रिटिकल लिंक्स : लर्निंग इन द आर्ट्स एंड स्टूडेंट अकादमिक एंड सोशल डेवलपमेंट*, आर्ट्स एजुकेशन पार्टनरशिप, वाशिंगटन डी.सी. https://www.aep-arts.org/resources-by-topic/

पियाजे, जे. 1970. पियाजेस थ्योरी पी.एच. में मुसेन (सं.). *कारमाइकल मैनुअल ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजी*. खंड 1, पृ.सं. 703–732. विली.

फिस्के. 1999. *चैंपियंस ऑफ चेंज : द इम्पैक्ट ऑफ द आर्ट्स ओन लर्निंग*. आर्ट्स एजुकेशन पार्टनरशिप.

बैमफोर्ड. 2006. *द वाओ फैक्टर : ग्लोबल रिसर्च कोम्पेंदियम ओन द इम्पैक्ट ऑफ़ द आर्ट्स इन एजुकेशन*. वैक्समान वेर्लग.

ब्लूम, बी.एस. और अन्य. 1956. टेक्सोनोमी ऑफ एजुकेशनल ओब्जेक्टिव्स : द क्लासिफिकेशन ऑफ एजुकेशनल गोल्स. *हैंडबुक 1 : कोगनिटिव डोमेन*. डेविड मक्के कंपनी.

मालागुज़ी, एल. और अन्य 1994. *द हंड्रेड लैंग्वेज ऑफ चिल्ड्रेन : द रेग्गियो एमिलिया एक्सपीरियंस इन ट्रांसफॉर्मेशन*. कैरोलिन एडवर्ड्स और अन्य. अब्लेक्स पब्लिशिंग.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

वायगोत्स्की, एल.एस. 1978. *माइंड इन सोसाइटी : द डेवलपमेंट ऑफ हायर साइकोलॉजी प्रोसेस*. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

हेटलैंड, एल. और अन्य. 2013. *स्टूडियो थिंकिंग 2 : द रियल बेनीफिट्स ऑफ विजुअल आर्ट्स एजुकेशन*. टीचर्स कॉलेज प्रेस.